अध्याय : 6

स मा प न

अध्याय : 6

स मा प न

मोहन राकेश हिन्दी नाट्य-साहित्य में आधुनिक नाटकों के मसीहा है। आपके व्यक्तित्व का प्रभाव आपके समस्त साहित्य पर पड़ा है। आप की यथार्थवादी दृष्टि जीवन की अनुभूतियों को गहराई से व्यक्त करती रही है। आपने अपने जीवन में अर्जित अनुभूतियों को साहित्य के माध्यम से पाठकों एवं दर्शकों के सामने रख दिया है। आज व्यक्ति उसी साहित्य में रूचि रखता है जो जीवन के समकालीन हो। आपका साहित्य इस कसौटी पर खरा उतरता है। इसलिए मैंने आपके नाट्यसाहित्य का ऐतिहासिक, यथार्थता और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन के लिए विषय चुनकर यह लघु-शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया है।

आप का साहित्य समाज के तीनों स्तरों को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। उच्च वर्ग की नैतिक पतन, मध्यवर्ग की समस्याएँ और निम्नवर्ग की अस्तित्व से शुरू होने वाली चिंताएँ आपके समग्र साहित्य में प्रभावी रूप से व्यक्त हो गयी हैं। आपने साहित्य की सभी विधाओं को अपनाया है। साहित्य की प्रत्येक विधा पर आपने अपने व्यक्तित्वं की छाप रख छोड़ी है। कहानी, उपन्यास से नाटक, एकांकी तक सभी साहित्य विधाओं को आपने अपने विचार अभिव्यक्त करने का साधन बनाया है।

आपका व्यक्तिगत जीवन संत्रास एवं पीड़ा से भरपूर था। आप अपने अंतर की विद्रोही भावना को साहित्य में व्यक्त करते रहे। आपके समक्ष रहने वाले व्यक्ति तक को इसका अंदाजा नहीं रहा। आपको मस्तमौला ही कहा जाता था। बहुत थोड़े लोग हैं जो आपके व्यक्तित्व की असलियत जानते रहे हैं।

आपके नाट्य-साहित्य का विवेचन करने के समय मैंने आपके साहित्य में जो पाया उसे यहाँ संक्षेप में दे रही हूँ।

प्रथम अध्याय में मैंने आपकी जीवनी दी है। आपके वैयक्तिक जीवन का परिचय दिया है। आपको जिस यथार्थ ने बनाया उन महत्वपूर्ण पारिवारिक घटनाओं का जिक्र किया है। विशेषकर पिताजी की मृत्यु, आर्थिक समस्या, माँ की चूड़ियों को बेचना आदि घटनायें तो आपको आजीवन प्रभावित करती रही। बचपन का परिवेश जिसने आपको विद्रोही बना दिया उसको प्रस्तुत किया है। आपने ऋणग्रस्त रहकर भी जो अध्ययन किया विशेषकर एम्.ए. की उपाधि हिन्दी और संस्कृत में पायी और अध्यापन भी किया। इसी अध्ययन ने आपके साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में बड़ा योग दिया। विद्रोही, आत्मसम्मानी स्वभाव के कारण आपने अपनी जेब में इस्तीफा पत्र रखकर अनेक जगह काम किया। "सारिका" पत्रिका को नया रूप दिया। खोज कार्य भी किया जिसका विषय - "नाटक में शब्द को महत्व" है, यह विषय ही बता देता है कि राकेश भाषा पर किस प्रकार प्रेम करते रहे हैं। नाटक के संदर्भ में तो यह बात और महत्व रखती है।

अनेक जगह काम करते हुए जो अनुभूतियाँ आपको मिलीं, जिस यथार्थ से आप टकराते गये उसी ने आपके साहित्य को सामयिकता प्रदान की। आप ईमानदार थे। यही ईमानदारी आपके वैयक्तिक और साहित्यिक जीवन में देखने मिलती है। आपने कविता प्रारंभ में लिखी पर कवि मन को आजीवन सम्हाला। यही कवि मन हर विधा में झलकता है। संवेदनशील राकेश को घर की तलाश थी। इस घर में दोस्तों को प्रथम स्थान फिर साहित्य और अंत में परिवार थे। बाहर से हँसी में डूबा अंदर से आक्रंदन करने वाले राकेश का देहान्त 3 दिसम्बर 1972 की शाम को हुआ।

आपने कहानियाँ लिखीं, उपन्यास लिखें जिनमें महानगरीय जीवन, विभाजन की पीड़ा, अकेलापन, यांत्रिकता जैसे विषयों को भावुक मन के सहारे चित्रित किया गया है। आपने निबंध लिखें, यात्रा-वृत्तांत, जीवनियाँ लिखी हैं। इनको पढ़ते समय

आपका संवेदनशील कवि मन दिखायी देता है। इसके अलावा आपने एकांकी बीज नाटक, ध्वनि नाटक लिखे हैं। आपने "मृच्छकटिक" तथा "शाकुंतल" का अनुवाद किया है। इससे आपका संस्कृत के प्रति आकर्षण स्पष्ट होता है। हेनरी जेम्स के उपन्यास का अनुवाद किया। अनुवाद को रचनात्मक साहित्य के स्तर तक उतारा है। आपने बच्चों के लिए बाल-साहित्य का सृजन किया है।

इसके उपरान्त नाटककार के रूप में आपके प्रमुख तीन नाटक - "आषाढ़ का एक दिन", "लहरों के राजहंस" और "आधे अधूरे" का विवेचन किया है। 'पैर तले जमीन' आपका अधूरा नाटक कमलेश्वरजी ने पूरा किया, अतः उसे इसे अध्ययन में लिया नहीं गया। राकेशजी का ही व्यक्तित्व इन तीनों नाटकों में विकसित होता हुआ दीखता है। एक कवि की व्यथा जो यथार्थ से टकराकर बिखेरती है पहले नाटक में है। नन्द और सुंदरी का द्वंद यथार्थ रूप में उतारा गया है। भोग और त्याग की लहरों पर तैरता नंद "लहरों के राजहंस" में मिलता है। "आधे अधूरे" में आनंद, घर को न पाने की व्यथा में टूटता हुआ परिवार, व्यक्तित्व का विघटित होना चित्रित हुआ है। बदलता युग, स्त्री-पुरूष संबंध, युवा पीढ़ी का बदलाव इसमें आया है। इस प्रकार राकेश की नाट्य-साधना का दिग्दर्शन किया है।

दूसरे अध्याय में इतिहास क्या है उसका तथा ऐतिहासिक नाटक की परंपरा का जिक्र किया है। मोहन राकेश के नाटक इस परंपरा में मोड़ लाने वाले हैं। राकेशजी ने इतिहास विषय अपनाया है। लेकिन ऐतिहासिक चित्रण करना उनका उद्देश्य नहीं। उनके निजी उदाहरणों द्वारा इसे प्रस्तुत किया है। कालिदास ऐतिहासिक कालिदास न होकर उसकी पीड़ा आज के साहित्यकार की पीड़ा बनाकर प्रस्तुत की गयी है। यही बात नंद के संदर्भ में भी है। इसी कारण आप नाट्य-साहित्य में नया मोड़ प्रस्तुत कर सके। इसी मौलिकता को प्रस्तुत किया है।

तीसरे अध्याय में यथार्थवाद की चर्चा की है। नया साहित्य जीवन के निकट आया है। उसमें जीवन के तनाव, उलझनें निर्माण हुई हैं उनको दिखाया है। महानगरीय जीवन का यथार्थ बोध इसमें आया है। मध्यम वर्ग की आर्थिक

समस्या, नैतिक अनैतिकता का प्रश्न, नारी का नौकरी के लिए निकलना, घर की अनेक समस्यायें उपस्थित करता है। युवा पीढ़ी का बहकना, बेकारी, टूटता परिवार चित्रित किया है।

चौथे अध्याय में मनोविज्ञान का परिचय दिया है। इसका प्रभाव साहित्य पर पड़ा है। वास्तव में यथार्थवाद में सामाजिकता के साथ वैयक्तिक समस्याओं का जो अध्ययन होता है उसमें मनोविज्ञान सहायकारी रहा है। व्यक्तित्व का निर्माण, उसका विघटन, उलझनें सही रूप में जानने, उतारने में मनोविज्ञान सहायकारी होता है। राकेशजी के तीनों नाटकों का अध्ययन करते समय यह दिखायी देता है कि इन तीनों नाटकों के पीछे राकेश की अनुभूति खडी है। वह फिर कालिदास की व्यथा हो, नंद का द्वंद्व हो या महेन्द्र का व्यक्तित्व हो।

पाँचवें अध्याय में नाटक और रंगमंच का संबंध प्रस्तुत किया है। मोहन राकेश के नाटकों में वस्तु का प्रदर्शन। पात्रों का व्यक्तित्व, उनकी भाषा, ध्वनि, प्रकाश आदि के प्रभाव की योजना पर विचार किया गया है, इससे दिखाया है कि इन सबके माध्यम से प्रभावी अभिव्यक्ति कैसी हुई है। नाटक जो प्रस्तुत करते हैं और उनके साथ दिग्दर्शक का महत्व है। लेकिन नाटककार को अलग नहीं किया जा सकता। नाटककार की महत्ता सबके साथ मानी गयी है। इस तरह नाटककार मोहन राकेश जिसे नाटक का मसीहा माना गया है उसकी महत्ता को समझाने का प्रयत्न किया गया है।

मोहन राकेश का जीवन, उनका साहित्य और विशेषकर उनकी नाट्यसाधना का महत्व जानने की कोशिश की गयी है। नाटक को नया अर्थ अर्थात रंगमंच से जोड़ने का कार्य आपने किया है। इसीलिए रंगमंच के संदर्भ में विचार करना जरूरी हुआ। अन्यथा मोहन राकेश की नाट्य-साधना का अध्ययन अधूरा रहता।

इस प्रकार इस लघु-शोध-प्रबंध में मैंने मोहन राकेश की, जीवनी तथा साहित्य का अध्ययन करते हुए नाटककार के रूप में अध्ययन किया है। नाटकों का ऐतिहासिक, यथार्थ तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विवेचन प्रस्तुत करते हुए उस पर निष्कर्ष दिए हैं। राकेशजी ने नाटक को रंगमंच से जोड़ा है इसीलिए उनके नाटकों का अध्ययन करते समय उनके नाटकों के रंगमंच का भी अध्ययन आवश्यक लगा। अतः उसे भी यहाँ दिया है। इस प्रकार मोहन राकेश के नाटकों का सभी दृष्टि से विवेचन किया है।

निष्कर्ष

1. मोहन राकेश सफल नाटककार हैं।
2. समसामयिक समस्याओं का वैयक्तिक समस्याओं का, व्यक्ति के विघटन का, उलझनों का यथार्थ चित्रण किया है।
3. रंगमंच की दृष्टि से नाटकों की प्रस्तुति की गई है।
4. मोहन राकेश के ऐतिहासिक नाटक आधुनिक जीवन की विसंगतियों, पीड़ा को व्यक्त करते हैं।